

PROCEEDINGS OF INTERNATIONAL SEMINAR 2026

Environmental Risks, Vulnerabilities &
Adaptation Strategies (EVA)



EDITOR

NILMANI MUKHERJEE

अध्याय 43 साहित्य, समाज और पर्यावरण	309
अध्याय 44 झारखंड में आपदा प्रबंधन रणनीतियों की भूमिका : असुरक्षा में कमी का एक अध्ययन	313
अध्याय 45 सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रदूति एवं पर्यावरण	317
अध्याय 46 सतत कंप्यूटिंग पर्यावरण संरक्षण और नैतिक उत्तरदायित्व	320
अध्याय 47 हिंदी की पर्यावरणीय कविता	325
अध्याय 48 साहित्य बौद्ध पारिस्थितिकी : जलवायु परिवर्तन के समाधान में बौद्ध नैतिकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	336
CHAPTER 49 ANTIBACTERIAL ACTIVITY OF BOERHAVIA DIFFUSA AND OCIMUM SANCTUM EXTRACTS AGAINST ESCHERICHIA COLI AND MICROCOCCUS LUTEUS ASSOCIATED WITH FISH SEPTICEMIA	342

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति एवं पर्यावरण

डॉ० रत्ना चटर्जी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

अन्नदा महाविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

शोध-सार :

मनुष्य और प्रकृति का संबंध अटूट है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य सदा से प्रकृति पर निर्भर रहा है, किंतु आज के भौतिकवादी युग में मानव प्रकृति से विमुख होता जा रहा है। आध्यात्मवाद के प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं में मनुष्य और प्रकृति के इस गहरे एवं आत्मीय संबंध को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पर्याय हैं।

आज जब मानव अति-बौद्धिक होकर प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है, तब पृथ्वी पर असंतुलन उत्पन्न हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता की हानि तथा विभिन्न प्रकार के प्रदूषण जैसी भयावह समस्याएँ हमारे सामने खड़ी हैं। पंत ने न केवल प्रकृति की सुषमा और सौंदर्य से हमें परिचित कराया है, बल्कि हमें उसके संरक्षण के प्रति जागरूक भी किया है। इसलिए उन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।

बीज शब्द : जैव-विविधता, प्रदूषण, भौतिकवाद, असंतुलन

प्रस्तावना :

हमारी पृथ्वी का आधार पर्यावरण है, जिसके आश्रय में हम पलते-बढ़ते हैं। सभ्यता के विकास से लेकर आज तक मानव प्रगति में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास भी पर्यावरण के सामंजस्य एवं अनुकूलता से ही संभव हुआ है। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति को मानव जीवन की सहचरी के रूप में स्वीकार किया है। उन्हें अपने काव्य-जीवन की प्रेरणा अपनी जन्मभूमि के नैसर्गिक सौंदर्य से प्राप्त हुई।